

विचार बिन्दु

किताबों में वजन होता है! ये यूँ ही किसी के जीवन की दशा और दिशा नहीं बदल देती। -इला प्रसाद

शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि : वरदान या अभिशाप

बहुत सारे लोग हर नई चीज को संदेह की नजर देखते हैं। वे आशंकिता रहते हैं कि जैसे ही कुछ नया उनके जीवन में आएगा, कुछ न कुछ अनिष्ट करेगा। याद कीजिए, जब मुद्रण चलन में आया तो कुछ को लगा कि इससे ज्ञान गलत हाथों में पहुंच जाएगा। जब ध्वनि मुद्रण (रिकॉर्डिंग) की शुरुआत हुई तो हमारे बहुत सारे बड़े गायक-गायिकाओं ने इससे दूरी बरती। जब कंप्यूटर के आने की आहट सुनाई दी तो इन पंक्तिव्यंकों के लेखक सहित बहुतों को लगा कि इससे भयंकर बेरोजगारी का कहर टूट पड़ेगा। समय इस बात का साक्षी है कि बावजूद कुछ आशंकाओं के सही साबित होने के, मानवता ने सारे बदलावों को न केवल अपनाया, उनसे अपने जीवन को सुगम और बेहतर भी बनाया। सोचिये, क्या आज आप कंप्यूटर विहीन जीवन की कल्पना भी कर सकते हैं?

आज फिर इतिहास अपने आप को दोहरा रहा है। दुनिया भर में एक नई सुविधा ने हलचल मचा रखी है। इसका नाम है कृत्रिम बुद्धि। वैसे तो इस पर काम काफी पहले शुरू हो गया था लेकिन हाल के वर्षों में इसका बहुत तेजी से प्रसार हुआ है। तकनीक के क्षेत्र में अग्रणी संस्थान गूगल की एक अधिकारी के अनुसार कृत्रिम बुद्धि विषयक गूगल की सुविधाओं का उपयोग करने में भारतीय सबसे आगे है। मजे की बात यह कि हम ऐसी बहुत सारी सुविधाओं का जिनके बारे में शायद हममें से बहुतों को यह बात पता भी नहीं है कि वे कृत्रिम बुद्धि आधारित हैं, न केवल उपयोग करते हैं, वे हमारे लिए अपरिहार्य भी हो चुकी हैं।

जीवन के तमाम क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। कला-साहित्य-संस्कृति सब इससे लाभान्वित और प्रभावित हो रहे हैं। आप अपनी कल्पना के अनुसार चाहे जैसी तस्वीर रच सकते हैं, गाना बना सकते हैं, लेख लिख सकते हैं। कहना अनावश्यक है कि इस तकनीक और कौशल के बहुत सारे खतरे हैं। लेखक को लग सकता है कि अगर यह सब अधिक चलन में आ गया तो उसका क्या होगा? कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग कर आप एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद कर सकते हैं। बहुत सारे लोग करते भी हैं। तो क्या सारे अनुवादक बेरोजगार हो जाएंगे? ऐसे बहुत सारे सवाल हर रोज उठते रहते हैं।

कृत्रिम बुद्धि के प्रयोग से जो बहुत सारे क्षेत्र उत्तेजित, प्रसन्न और आशंकिता हैं उनमें से एक बहुत बड़ा क्षेत्र शिक्षा का है। शिक्षा की दुनिया में इस नई सुविधा को लेकर बहुत सारी उम्मीदें और आशंकाएं दोनों हैं। इस बात पर बहुत सारे विमर्श हो रहे हैं कि क्या निकट भविष्य में कृत्रिम बुद्धि शिक्षकों को विस्थापित कर देगी? क्या कृत्रिम बुद्धि शिक्षा के प्रसार पर होने वाले मानवीय श्रम और व्यय को घटा देगी? क्या कृत्रिम बुद्धि शिक्षक के सहायक के रूप में सामने आएगी? क्या यह शिक्षा का पूरा चेहरा ही बदल कर देगी? अगर कृत्रिम बुद्धि से थोड़ा पीछे चक्कर देखें तो तकनीक ने काफी कुछ बदला है। मोटे-मोटे और कई खण्डों वाले विषय कोश लगभग अप्रासंगिक हो गए हैं। किसी जानकारी को हासिल करने के लिए आपको पुस्तकालय तक जाने की जरूरत लगभग खत्म हो गई है। सब कुछ आपकी हथेली में आ गया है। जिन चीजों को याद करने में हमें बहुत सारी ऊर्जा लगानी पड़ती थी, अब उन्हें याद रखने की जरूरत ही समाप्त हो गई है। ऐसे बहुत सारे बदलाव हुए हैं। वे बदलाव सकारात्मक हैं या नकारात्मक, इस बात से अलग हटकर इस बात को देखें कि ये बदलाव हो चुके हैं। आज कोई पहाड़े याद नहीं करता, क्योंकि यह सारा काम अधिक दक्षता और तीव्रता से कैलकुलेटर कर देता है। आज मुझे अपने चार आर्यावीय के फोन नम्बर भी याद नहीं हैं, क्योंकि एप्स करने की कोई जरूरत ही नहीं रह गई है। ऐसे अनगिनत बदलाव हमारे चाहे अनचाहे हमारी जिंदगी का अभिन्न अंग बन चुके हैं।

तो यह बात तो सुनिश्चित है कि शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि को आना ही है। बल्कि वह आने लगी है। भविष्य में उसका प्रयोग और ज्यादा बढ़ने वाला है। जब मैं भारत के संदर्भ में विचार करता हूँ तो पाता हूँ कि इस बात के दोनों ही पक्ष हैं। कृत्रिम बुद्धि अगर हमारी शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाएगी, तो उसके लिए कुछ चुनौतियाँ भी खड़ी करेगी। आइये, हम इन दोनों पक्षों पर विचार करते हैं। पहले सकारात्मक पक्ष को लें। मुझे कृत्रिम बुद्धि की सबसे बड़ी सुविधा इस बात में नज़र आ रही है कि वह कौशल डेवलपमेंट या चैटबॉट के माध्यम से विद्यार्थी किसी भी समय व कहीं भी अपनी समस्याओं का समाधान पा सकते हैं। इस सुविधा के लिए उन्हें विद्यालय परिसर में होना आवश्यक नहीं होगा। अगर वे अस्वस्थ हैं और घर पर हैं, या और किसी कारण से अवरकाश पर हैं तो भी इस सुविधा से अपने अध्ययन को निर्बाध जारी रख सकेंगे। इससे जुड़ा एक और लाभ यह भी है कि इस तकनीक का उपयोग शिक्षा को दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुंचाने के लिए भी किया जा सकता है। इससे उन विद्यार्थियों को भी शिक्षा मिल सकती है, जो किसी न किसी वजह से विद्यालय तक जा सकने में समर्थ नहीं हैं। कृत्रिम बुद्धि आधारित शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों की सीखने की गति, समझने की क्षमता और उनकी व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार शिक्षा सामग्री को अनुकूलित कर सकती है। इससे अलग-अलग क्षमताओं वाले विद्यार्थियों को उपयुक्त स्तर की शिक्षा देना सम्भव होगा, जो वर्तमान व्यवस्था में प्रायः सम्भव नहीं है।

अधिक सांख्यिक अध्ययन से अधिक आकलन और मूल्यांकन में नज़र आता है। इसकी मदद से विद्यार्थियों की प्रगति का डेटा विश्लेषण करके उनकी कमजोरियों और ताकतों को जाना जा सकता है, और यह जानने के बाद उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण विधियाँ तैयार की जा सकती हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था की जो सबसे बड़ी कमजोरी है- मूल्यांकन का पक्षपात विहीन होना, उससे यह तकनीक काफी हद तक मुक्ति दिला सकती है। इस तकनीक का प्रयोग उत्तर पुस्तिकाओं के स्वचालित मूल्यांकन में किया जा सकता है, जिससे न केवल शिक्षकों का कार्यभार कम होगा मूल्यांकन प्रक्रिया में मानवीय त्रुटियों और दुष्टताओं की संभावना घटेगी। अगर कोई मुझसे पूछे तो मैं इसे कृत्रिम बुद्धि का सबसे बड़ा योगदान कहना चाहूँगा। ऐसी और अनेक सुविधाएँ हैं जो कृत्रिम बुद्धि के प्रयोग से हमारी शिक्षा व्यवस्था को प्राप्त होने की सम्भवानाएँ हैं। जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धि के अनुप्रयोग विकसित होंगे, इन सुविधाओं का भी विकास और विस्तार होगा।

अब थोड़ी बात चुनौतियों की भी कर ली जाए। सबसे पहली बात तो यह है कि हमारे पास साधनों की बहुत कमी है। कृत्रिम बुद्धि के प्रयोग के लिए डिजिटल उपकरण की आवश्यकता होती है और उसके परिचालन के लिए इंटरनेट की निर्बाध जरूरत होती है। क्या हम इसके लिए पूरी तरह सज्ज हैं? केवल इतना ही नहीं, हमारे यहां तो बात-बात पर कानून और व्यवस्था के नाम पर इंटरनेट सुविधाओं को स्थगित करने का चलन है। ये सारी बातें इस सुविधा का कितना लाभ लेने देगी? फिर भी विचारणीय है कि क्या हमारा शिक्षक समुदाय, विशेष रूप से सरकारी विद्यालयों का शिक्षक समुदाय इस सुविधा का लाभ विद्यार्थियों तक पहुंचाने के लिए समुचित रूप से प्रशिक्षित हो पाएगा? और अगर हो भी गया तो क्या वह इस नवाचार के प्रयोग में रूचि लेगा? तीसरी बड़ी चुनौती हमारी भाषिक विविधता को लेकर है। यह सही है कि तकनीक पर अब केवल अंग्रेजी का वर्चस्व नहीं रह गया है और अनेक भारतीय भाषाओं का समर्थन उसे प्राप्त है, फिर भी देश की ज्यादातर भाषाओं का समर्थन तकनीकों को मिलने में अभी काफी समय लगेगा। यह समर्थन मुख्यतः निजी क्षेत्र ही उपलब्ध करा रहा है और जहां उसे अपना लाभ नज़र नहीं आएगा, वहां वह ऐसा क्यों करेगा? शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि के बढ़ते हस्तक्षेप को लेकर जो सबसे बड़ी आशंका मेरे मन में है वह यह है कि इससे मानवीय स्पर्श घटता जाएगा, और यह एक बहुत बड़ी दुर्घटना होगी। मैं मानवीय स्पर्श रहित शिक्षा को बहुत बड़े खतरे के रूप में देखता हूँ। मुझे आशंका है कि इस तरह की शिक्षा से हम जो पीढ़ी तैयार करेंगे वह हमारी बहुत सारी अपेक्षाओं की कसौटी पर खरी नहीं उतरेगी।

यहां मैंने शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि के उपयोग को लेकर दोनों पक्षों को सामने रखने का प्रयास किया है। एक ख़ास बात यह है कि ऐसा करने में मैंने खुद भी कृत्रिम बुद्धि का थोड़ा सहयोग लिया है। मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि दोनों ही पक्षों को जो बातें मैंने की हैं, वे असंलिप्त हैं। परिदृश्य बहुत तेजी से बदल रहा है। हर रोज नई सुविधाएँ सामने आ रही हैं। इसलिए यह बात भविष्य ही बताएगा कि कृत्रिम बुद्धि शिक्षा के लिए वरदान साबित होती है या अभिशाप!

(बंगलुरु प्रवास से)

-अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)



राजेन्द्र भागवत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब 2014 में पहली बार प्रधानमंत्री बने, तो उन्होंने देश के प्रयुक्त नागरिकों, विशेषकर वरिष्ठजनों से यह अपील की थी कि वे सरकार के सामाजिक कार्यों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य आदि में अपना सहयोग प्रदान करें। इसी आव्हान से उत्साहित होकर अंग्रेजी की एक सेवानिवृत्त प्रोफेसर ने अपने कुछ सहयोगियों के साथ मिलकर, अपनी स्वैच्छिक संस्था के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित वर्ग की बालिकाओं के साथ काम करने का निर्णय लिया। पहले तो उन्होंने सरकार द्वारा संचालित समाज कल्याण विभाग के आवास गृहों में रह रही बालिकाओं को काउंसिलिंग और कौशल प्रदान करने का काम किया। इसके बाद, उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र की राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाली सातवीं से दसवीं तक की बालिकाओं को विद्यालय समय के बाद, विज्ञान, कंप्यूटर, अंग्रेजी और गणित में शिक्षण देना का काम किया। इसके परिणाम स्वरूप जो लड़कियाँ 40-50 प्रतिशत अंक प्राप्त करती थीं, वे 80-90 प्रतिशत अंक बोर्ड की परीक्षाओं में ला सकीं। इसी प्रकार का काम इस संस्था ने जयपुर की अल्पक निर्धन परिवारों की लड़कियों के साथ भी किया। यहां भी बड़े उत्साहवर्धक परिणाम आए। संस्था द्वारा शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने के साथ ही बालिकाओं में विभिन्न प्रकार के जीवन कौशल भी विकसित किए गए। इसी कारण ये बालिकाएं अब पूरे आत्मविश्वास के साथ आगे का

अध्ययन कर रही हैं।

गत वर्ष इस संस्था ने छोटे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने की दृष्टि से एक शिक्षण केंद्र प्रारंभ किया। इसमें घरों में काम करने वाली बाइयों, दिहाड़ी मजदूरी करने वाली परिवारों के चार से दस वर्ष के बालक बालिकाओं को पढ़ाई-लिखाई के साथ सर्वांगीण विकास के अवसर प्रदान करने का कार्य प्रारंभ किया। इन्होंने इस कार्य के लिए कुछ समर्पित शिक्षिकाओं की भी अपने साथ जोड़ा, जिन्हें सरकारी शिक्षकों की तुलना में बहुत कम मानदेय दिया जाता है। इस संस्था का संचालन केवल अपने परिचितों और मित्रों से प्राप्त सहायता राशि से ही किया जा रहा है। इस केंद्र की लोकप्रियता के कारण कई बच्चों ने सरकारी विद्यालय, जहां मिड डे मील भी मिलता है, छोड़कर इस शिक्षण केंद्र में प्रवेश लिया। वर्तमान में यहां लगभग 90 प्रतिशत बच्चे नामांकित हैं। इन्हें समय-समय पर सहायककर्ताओं द्वारा अच्छा रचिकर नाशता अवश्य दिया जाता है।

कुछ अभिभावकों के आग्रह पर, संस्था के पदाधिकारियों ने इस केंद्र को प्राथमिक विद्यालयों में परिवर्तित करने की सोची। इस संस्था द्वारा प्राथमिक विद्यालयों के रूप में मान्यता का प्रयास डेढ़ वर्ष से किया जा रहा है और अब तक सफल नहीं हो पाई है। इसी की वजह और कथा का उल्लेख इस लेख में करने का प्रयास किया गया है, ताकि सरकार में बैठे लोग यह समझ सकें कि क्यों मन से समाज सेवा करने वाले लोग, आसानी से समाज सेवा के कार्य में सरकार के साथ नहीं जुड़ पाते?

मान्यता के लिए जब जयपुर स्थिति शिक्षा संकुल में पता किया, तो बताया गया कि अज्ञातकार सरा का ऑनलाइन होना है और मान्यता के लिए प्राथमिक पर पोर्टल पर ही देना होता है, जो निश्चित अवधि में ही उपलब्ध होता है। चूंकि, यह अवधि गत वर्ष समाप्त हो चुकी थी, वर्य 2023-24 में ऐसा करना संभव नहीं हो पाया। इस कार्यवाही को फिर इस सत्र में करने की कोशिश की गई। कई प्रकार की विस्तृत जानकारी पोर्टल पर

उपलब्ध कर दी गई। डॉ. अशोक शर्मा ने अनेक प्रतिष्ठानों में प्रयास किए। विभिन्न स्तरों पर बात करने के साथ ही निदेशक, विस्तृत रूप से देने का एक ही कारण है कि सरकार, स्वैच्छिक कार्य करने वालों को यदि प्रोत्साहित नहीं करे, तो काम से कम उन्हें हतोत्साहित ही प्रताड़ित तो न करे। मैंने तो प्रारंभिक निदेशक को यह आग्रह किया था कि वह जब जयपुर आए तो इस शिक्षण केंद्र को स्वयं देख लें। उन्हें यह स्पष्ट हो जाएगा कि इसमें पढ़ने वाले बच्चों का शैक्षिक स्तर, अधिकांश सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की तुलना में कहीं बेहतर है। खैर, वे नहीं आए। शायद उनकी रूचि भी नहीं थी, इसलिए उनका आना न हो पाया।

अब मैं इसे सरकार और समाज के प्रयुक्त वर्ग पर छोड़ता हूँ कि इस प्रकार के घटनाक्रम से समाज में क्या संदेश जाता है? इस आलेख का उद्देश्य, किसी व्यक्ति विशेष पर लॉखन लागाना नहीं है, किंतु कुल मिलाकर जो सरकारी प्रक्रिया और मानसिकता है उस पर तंत्र प्रश्न है स्वतः लगता है। इस प्रकार की मानसिकता के चलते, प्रधानमंत्री के द्वारा किए गए आव्हान के बावजूद, कितने लोग समाज सेवा के पुनीत कार्य से जुड़ पाएंगे, कहना कठिन है। इसे हम देश का दुर्भाग्य ही कहेंगे कि विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाली अनेक संस्थाएँ, इच्छा के बावजूद देश के विकास में सक्रिय भूमिका निभाने में संकोच करने लगी हैं। इन लोगों को कुछ नहीं चाहिए, बस केवल सरकार का प्रोत्साहन और उसके अधिकारियों का अच्छा व्यवहार चाहिए।

कैसे विडंबना है कि जो शिक्षा अधिकारी एक समर्पित स्वैच्छिक संस्था के प्रस्ताव में हर तरह की अड़चन डालने का प्रयास कर रहे हैं, उन्होंने सरकार द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों को शायद कभी देखा ही नहीं है! अधिकांश विद्यालय एक या दो कमरों में चलते हैं एवं बहुत ही गंदगी का वातावरण में संचालित हैं, कितने जब उन्हें किसी संस्था द्वारा संचालित शिक्षण केंद्र को प्राथमिक विद्यालय के रूप में मान्यता प्रदान करने का अवसर मिला तो अपनी सारी विद्वता इसी में लगा दी कि, कैसे इस काम को रोका जाए? बाद में, किसी ने यह भी बताया कि यदि आपका स्कूल का निरीक्षण करने के लिए जो शिक्षा अधिकारी आए थे, उनकी ठीक तरह 'आवागमन' कर ली गई होती, तो आपको शीघ्र मान्यता मिल चुकी होती।

इस कथन में कितनी सच्चाई है, यह कहना तो कठिन है। इस संस्था के पदाधिकारी, प्रारंभ से नैतिक मूल्यों के वाहक रहे हैं और इसी के आधार पर पूरी समर्पण भावना से काम कर रहे हैं, इसीलिए उन्हें यह अनैतिक तरीका कतई मंजूर नहीं था। शायद इसी कारण, उन्हें

पी.ओ.पी. फैक्ट्रियों के धुएं से खारा गांव के ग्रामीण परेशान

■ प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने जब यहां का एयर क्वालिटी इंडेक्स नापा तो 900 आया, जो पूरे प्रदेश में सबसे ज्यादा है

■ गांव में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर पर जा पहुंचा है इसका मुख्य कारण गांव से सटी 40 से अधिक पीओपी फैक्ट्रियों से निकलने वाला धुआं बताया जा रहा है

बीकानेर, (नि.सं.)। सुमित्रा श्वास की बीमारी से पीड़ित होने के कारण तीन महीने से स्कूल नहीं जा पा रही हैं। सुरेश पारीक की पत्नी संतोष और उनके तीन भतीजे भी दमा से परेशान हैं। ऐसे हालात खारा औद्योगिक क्षेत्र से सटे खारा गांव में हर घर की है। प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने जब यहां का एयर क्वालिटी इंडेक्स नापा तो 900 आया, जो पूरे प्रदेश में सबसे ज्यादा है। गांव में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर पर जा पहुंचा है। इसका मुख्य कारण गांव से सटी 40 से अधिक पीओपी फैक्ट्रियों से निकलने वाला धुआं बताया जा रहा है।

गजे सिंह सिसोदिया, महावीर सिंह, ओमराम प्रजापत, पूरण सिंह, दुलाराम, चंद्र सिंह, मांगीलाल ने बताया कि गांव में चौबीस घंटे घुटन महसूस होती है। खुली हवा में सांस लेना दूधर हो गया है। शाम से लेकर सुबह 10 बजे तक आसमान में धुएं की गर्द छाया रहती है। फैंक्ट्री से 70 मीटर दूर रहने वाले रामूमान के 70 वर्षीय पिता छोगाराम और पांचों बच्चे भी बीमार हैं। छैलें सिंह ने बताया कि उसकी बेटी सुमित्रा के दमे का इलाज चल रहा है। तीन महीने से स्कूल नहीं जा पा रही। उसे घर में ही रखना पड़ता

है। बेटे को हर वक इनहेलर पर निर्भर रहना पड़ता है। सरपंच पैरूसिंह राठौड़ ने बताया कि 1500 घरों के इस गांव की आबादी करीब 12 हजार है। हर घर में दो-तीन सदस्य श्वास की बीमारी से पीड़ित हैं। कुछ के शरीर में बनावट कैंसर भी निकलने लगे हैं। प्रशासन को कई बार हालात बता चुके हैं, लेकिन प्रदूषण फैलाने वाली फैक्ट्रियों को बंद कराना तो दूर कोई संभालने तक नहीं आता। सरकारी स्कूल के चार सौ से अधिक बच्चे और स्टाफ भी बुरी तरह परेशान हैं।

खारा गांव में वायु प्रदूषण की जांच के लिए प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने तीन अलग-अलग लोकेशन पर लोगों के

बनाया गया था। 125 में से 40 फैक्ट्रियों को उस जेन में भूखंड दिए गए थे। उस समय गांव की आबादी कम थी। अब आबादी मिनरल जेन के करीब आ गई है। दोनों के बीच केवल एक सड़क का ही फासला है। जब हवा गांव की तरफ होती है तो सांस लेना भी दूधर हो जाता है। प्रदूषण नियंत्रण मंडल के क्षेत्रीय अधिकारी का कहना है कि सभी फैक्ट्रियां एक साथ चलती हैं। गांव में वायु प्रदूषण का मानक 900 एक्यूआई आना इसका सबसे बड़ा कारण है।

प्रदूषण नियंत्रण मंडल के अनुसार खारा गांव से सटे मिनरल जेन को अन्यत्र शिफ्ट करना ही इस समस्या का समाधान है। दरअसल यह समस्या पिछले तीन सालों में ही पैदा हुई है। पिछले साल मई में संभागीय आयुक्त ने इस मुद्दे पर बैठक भी बुलाई थी। उस बैठक में 40 फैक्ट्रियों को अन्यत्र शिफ्ट करने पर चर्चा हुई थी, लेकिन उस पर अमल नहीं हो पाया और मामले को दबा दिया गया।

पीओपी के स्वसन रोग विभाग के प्रमुख विशेषज्ञ डॉ. प्रमोद ठक्करल का कहना है कि दमा, सीओपीडी का प्रमुख कारण वायु प्रदूषण है। पीओपी

की फैक्ट्रियों से निकलने वाला धुआं श्वास संबंधी बीमारियों का कारण बन रहा है। वहीं, पीवीएम हाँसिलस के वरिष्ठ स्कैनर गण विशेषज्ञ डॉ. आरडी मेहता का कहना है कि धुएं के कारण त्वचा संबंधी बीमारियाँ नहीं होती। इसका कारण कुछ और हो सकता है।

परविंद्र सिंह राठौड़, अध्यक्ष, खारा उद्योग संघ ने बताया कि मिनरल जेन रिको ने काटा था उस वक्त उन्हें गांव की सीमा का ध्यान रखना चाहिए था। अब पॉल्यूशन विभाग को गाड़ड़ लाइन के तहत पीओपी वाले काम कर रहे हैं। सबसे बड़ी सफाई की समस्या है। गाड़ड़ियों का पॉल्यूशन काफी ज्यादा है। रिको को सड़कों की सफाई करनी चाहिए। राजकुमार मीणा, क्षेत्रीय अधिकारी, राखस्थान प्रदूषण नियंत्रण मंडल बीकानेर का कहना है कि खारा गांव के पास पीओपी की 40 फैक्ट्रियों से निकलने वाले धुएं से सबसे ज्यादा वायु प्रदूषण फैल रहा है। उन्हें बंद कर दूसरी जगह शिफ्ट करना ही समस्या का समाधान है। हमारा सर्वे चल रहा है। आगे सफाह तक इसकी रिपोर्ट प्रशासन, रिको और सरकार को भेज दी जाएगी।

जैसलमेर में सैलानियों से ठगी करने वाले 73 रिसेटर्स पर केस दर्ज

जैसलमेर, (नि.सं.)। जिले के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल सम सैड ड्यूंस में रिसेटर्स की ऑनलाइन बुकिंग करके पर्यटकों के साथ ठगी की जा रही है। ट्रैवल वेबसाइट्स पर ऐसे फेक टेंट रिसेटर्स दिखाए जा रहे हैं जो वास्तविकता में धरातल पर हैं ही नहीं। पुलिस ने ऐसे 73 फर्जी रिसेटर्स के खिलाफ मामला दर्ज कर किया है। इसके साथ ही पुलिस ने बुकिंग डॉट कॉम, अगोडा, मेक माय

ट्रिप, ट्रिप एडवाइजर, यात्रा डॉट कॉम सहित विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर रिसेटर्स को फेक रिसेटर्स करने वाली कंपनियों को भी ऐसे फर्जी रिसेटर्स को वेबसाइट से हटाने को लिखा है। गौरतलब है कि सम में वास्तविकता में तो 150 के करीब रिसेटर्स हैं। लेकिन अलग-अलग ऑनलाइन वेबसाइट पर 400 से ज्यादा दिखा रहे हैं। यहां गुगल भी धोखा दे देता है। खाली

जमीन पर भी रिसेटर्स बता रहा है। जबकि वास्तविकता में वहां कुछ भी नहीं है। ऐसे में अब आने वाले सेलानी ऑनलाइन रिसेटर्स बुक करे धोखाधड़ी का शिकार हो रहे हैं। फेक रिसेटर्स चलाने वाले इतने शातिर हैं कि उन्होंने गुगल मैप पर रिसेटर्स की लोकेशन भी सेंटर करा रखी है। गुगल की तरफ से बाईपैसलेटर भी आता है, लेकिन ये लोग पोस्ट वितरण करने वाले से यह पर हासिल कर अपनी लोकेशन सेंटर करा देते हैं। दूसरे रिसेटर्स के स्थान पर अपने रिसेटर्स की लोकेशन तो कहीं किसी खाली पड़ो जमीन पर रिसेटर्स की लोकेशन सेंटर करा दी जाती है। जैसलमेर एसपी सुधीर चौधरी ने बताया कि ट्रैवल वेबसाइट पर भी रिसेटर्स फेक रिसेटर्स चलाने वाले अपने शातिर तरीके से ट्रैवल वेबसाइट के प्रतिनिधियों को भी दूसरे रिसेटर्स बताकर लिस्टेड करावा लेते हैं। इन वेबसाइट पर

कई फर्जी रिसेटर्स लिस्टेड है। जबकि यह रिसेटर्स धरातल पर हैं ही नहीं। इन वेबसाइट पर ट्रैवलस के ऐसे कई कमेंट भी मिल जायेंगे, जिससे उन्होंने साफ तौर पर लिखा है कि बुकिंग दूसरे रिसेटर्स के नाम से थी और उन्हें ठहराया कहीं आया गया। इसका मतलब साफ है कि लपकों ने फर्जी रिसेटर्स लिस्टेड करावा दिए और बुकिंग आने पर आगे किसी रिसेटर्स को बेच दी।

राशिफल

सोमवार 18 नवम्बर, 2024

मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि सोमवार, विक्रम संवत् 2081, मृगशिरा नक्षत्र दिन 3.49 तक, सिद्ध योग सायं 5.22 तक, षोडशक परातः 8.01 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

पंडित अनिल शर्मा ग्रह स्थिति - सूर्य-बुधिका, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-कर्क, बुध-बुधिका, गुरु-बुध, शुक्र-घनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में संचार करेगा। आज सवार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 3.44 तक है। भद्रा प्रातः 8.01 से सायं 6.56 तक है। आज सौभाग्य सुन्दर्य व्रत, चतुर्थी व्रत है। श्रेष्ठ चोषाडिया - अमृत - सूर्योदय से 8.13 तक, शुभ 9.32 से 10.52 तक, चत - 1.32 से 2.51 तक, लाभ-अमृत 2.51 से सूर्यास्त तक राहुकाल - 7.30 से 9.00 तक, सूर्योदय 6.53 सुयस्त 5.31

मेघ - व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। योजनागत कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा।

वृष - आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

मिथुन - मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनाकार बनने लगेगे। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क - व्याक्तगत परिशासियों के कारण मानसिक तनाव बना रहेगा। अनावश्यक समय खराब होगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि होगी। स्वभाव की तेजी पर ध्यान दे।

सिंह - साह-आधिक-लवताय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित खोस से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में अस्थितियों का आगमन होगा।

कन्या - व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों सफल रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त हो सकते हैं।

तुला - नवान कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृश्चिक - चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

धनु - व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा सम्भव है। नौकरी पैसा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर - स्वास्थ्य संबंधित चिंता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ - व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चन दूर होने लगेगी। व्यावसायिक विवादों का निरादरा हो सकता है। नौकरी पैसा व्यक्तियों को भाग-दौड से राहत मिलेगी।

मीन - परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में शुभ कार्य के लिए यात्रा सम्भव है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।